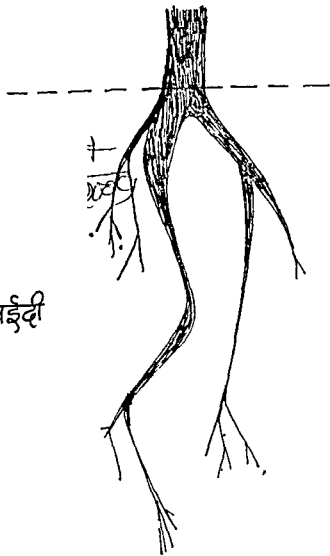


पंड.
गिरगाहुआ

वाराहदेवी प्रकाशन, बीकानेर



जबमूर साईदी

पंड.

गिरगाहूआ

मखमूर सईदी

प्रथम संस्करण 1986

मूल्य तीस रुपये मात्र

प्रकाशक

वाग्देवी प्रकाशन

सुगम निवास चन्दन सागर

बीकानेर

मुद्रक

साधना प्रिन्टर्स

सुगम निवास चन्दन सागर

बीकानेर

आवरण हरिप्रकाश त्यागी

PERH GIRTA HUA (*Urdu Poetry*)

by Makhmoor Saeedi

Rs 30-00

मरूमूर सईदी की कविता परम्परा और आधुनिकता की संधि रेखा की कविता मानी जाती रही है। लेकिन यह मान लेना मरूमूर की कविता को अघूरा समझना ही नहीं, परम्परा और आधुनिकता को एक दूसरे के बरक्स खड़ा कर देना है। परम्परा एक मूल्य दृष्टि है जबकि आधुनिकता अपनी परिस्थिति की पहचान—और ये दोनों अनिवायत एक दूसरे के विरोध में नहीं हैं क्योंकि अपनी परिस्थिति की पहचान में अपनी परम्परा की पहचान भी निहित है। जब किसी काव्य प्रतिभा की यात्रा समकालीन परिस्थितियों के बोध का रचनात्मक साक्ष्य देते हुए उन में भी अपनी मूल्य परम्परा का अवेपण करती है तो उस काव्य सवेदना का उद्घाटन होता है जो मरूमूर सईदी जैसे कवियों की साधकता को रेखांकित करती है।

मरूमूर को आधुनिक कवि कहने में कुछ लोगों को हिचक हो सकती है क्योंकि उन की शाइरी के विम्वों प्रतीको का आधुनिक जीवन से प्रत्यक्ष रिश्ता नहीं दीखता। लेकिन मरूमूर उर्दू के शाइर हैं और एक सवेदनशील और जिम्मेदार कलाकार की तरह उ ह अपने माध्यम—अपनी भाषा—की सम्प्रेषण परिस्थिति का वाजिब अहसास है। उर्दू कविता का सम्प्रेषण सस्वार और परिस्थिति आज भी मुख्यत वाचिक है—यद्यपि प्रकाशन की सुविधा पहले की अपेक्षा में बढ़ी है—और एक शाइर की हैसियत से मरूमूर इस परिस्थिति की अनदेखी नहीं कर सकते। अपनी सम्प्रेषण परिस्थिति की यह पहचान ही मरूमूर की कविता में उस आत्मीय टोन की पृष्ठभूमि है जिस की वजह से वह सहज सम्प्रेषणीय बन सकी और श्रोता समूहों द्वारा सराही जाती रही है।

लेकिन साथ ही मरूमूर के कवि को अपने समय के उन तनावों दबावों का भी तीखा अहसास है जिन का मुकाबला वह उस सरन आस्था से करना चाहते हैं जो वाचिक समाज की खास ताकत है। किंतु मरूमूर उन लेखकों में नहीं हैं जो हर क्षण अपनी आस्था का डोल पीटते रहते हैं। यह आस्था उन की कविता के रेने रेसे में फलती है—क्योंकि उन की काव्य-सवेदना समय की शक्ति को पहचानने के साथ साथ कविता की शक्ति को भी पहचानती है और इसलिए समय के सम्मुख आत्मसमर्पण नहीं कर देती। जब कवि प्रतिपल समय से लड़ने की या उसे अपने अनुकूल करन की घोषणा करता दिखता है तो कहीं न कहीं वह उस से गहरे में आतंकित हो रहा

होता है। मरूमूर की कविता अपनी आस्थाआ की अलग स घापणा नहीं करती लेकिन जब वह कहती है

तब उस पार १ जायगी जुदा राह कोई
भीड़ के साथ ही ललल में उतरना होगा

ता वह न केवल अपनी बृहत्तर अस्मिता और नियति को पहचानती है बल्कि राह बदलन की आवश्यकता का संकेत करती हुई भी मित्रों व वाल्दा के कथन की याद दिलाती है कि कविता इतिहास की सवा नहीं करती बल्कि उस के बोझ का नावभीमिव मानवीय अनुभव में रूपांतरण करती है।

शायद इसीलिए मरूमूर की कविता में वह आत्मविश्वास है जो अपनी भाषा में 'सावभीमिव' मानवीय अनुभव' की पहचान से उपजता है। उन की काव्य भाषा में एक विरल सहजता है जो गहरे स गहरे अनुभवों को बड़ी आत्मीयता के साथ हमारी संवेदना में उतार देती है

मर पटकते हैं बगोले वही मौजों की तरह
अब जो सहारा है किसी दिन ये समुंदर होगा

हिंदी कविता में पिछले कुछ अर्से से 'छन्द की वापसी', 'लिरिक की वापसी' और वाचिक परम्परा का बहुत चर्चा रहा है। मरूमूर की कविता हिंदी पाठक को शायद उस कविता की एक झलक दे सकती है जो श्रोता समूहों में तो प्रभावशाली है ही, पर पाठक के एकांत में भी बेअसर नहीं हो जाती।

मरूमूर भाई मेरी एक प्रिय भाषा के चरिष्ठ रचनाकारता हैं ही मैं उन्हें बड़ा भाई मानता रहा हूँ। इसलिए यह भूमिका लिखते हुए जहाँ मन में सकोच है वही यह अहसास भी कि शायद यह सब से बड़ा सम्मान है जो एक चरिष्ठ रचनाकार अपने बाद के रचनाकार को दे सकता है। उन क अनवरत स्नेह की कामना करता हूँ।

—नदकिंगोर आचाय

अनुक्रम

गजलें

- रग पेडा का क्या हुआ देखो 11
न रमता न कोई डगर है यहाँ 12
हर दरीचे मे मिर कतल का मजर होगा 13
रख कभी अपना हवाआ को बदलना भी पडा है 14
लड पडे बेबात भी, होता रहा ऐसा बहुत 15
रातो का अघेरा ही अत्र दिन का उजाला है 16
वहार लोट ही आई तो क्या कि तू ही न था 17
नजरा से साहिला के नजारे निहाँ हुए 18
जो ये शर्वे-तअल्लुक है कि है हम को जुदा रहना 19
बीते मौसम जो साथ लाती हैं 20
बसे बसाये परि-दो के घर उजडने लगे 21
एक अहसासे ज़िया, लम्हा ब लम्हा क्या है 22
मुतजिर उस का कोई खुद उस के घर म रह गया 23
बन सकें जो दिले रुस्वा के सहारे कम हैं 24
पे ब पे सभ्त सफर अपनी बदलता बमू है 25
पेड गिरता कोई नजर आया 26
भीड मे है मगर अकेला है 27
न एव' पल सर दस्त-तर्पा रुके बादल 28
दीवारो दर को मद का बादल निगल गया 29
सामने गम की रहगुजर आई 30
चल पडे हैं तो कही जा के ठहरना होगा 31
पार करना ह नदी को तो उतर पानी म 32

सर पर जो सायबाँ ये पिघलते हैं घूप म	33
सुन सका कोई न जिस को वा सारा मेरी धी	34
अल्फात म अहसास का ढाँटा गही जाता	35
गमो निशात की हर रहगुजर म तहा हूँ	36
जल घल सहरा सुनव समु दर रगते हैं	37
समझ न लम्ह ए हाज़िर का वाकआ मुझ का	38
य वसा रबन हुआ दिल को तरी जात क साथ	39
चढत दरिया से भी गर पार उतर जाओगे	40

नज्मे

दायरा के कगी	43
हृदयदिया	44
सराबे म	45
जादे सफर	47
पनघट	48
आत्तिरी नोहा	49
अजाम की तरफ	51
गगीदा	52
तिलिम्मे आवो गिल	54
आते जाते लम्हा की सदा	56
सफर का आखरी मजर	58
एक अच्छा गहरी	60
समु दर का नोहा सुनो !	63
मेरा नाम	65
गुमगुदा कडिया	66
खिजाँ का मौसम	67
रास्ते रोशन	69
खाक जो बाद से आगे	71
लहू म डूबता मजर	73
अधी गुफा मे मौत	75
नवद	76
बुलावा	78
जमी का ये टुकडा	79

103

रग पेड़ो का क्या हुआ देखो
कोई पत्ता नहीं हरा देखो

ढूटना अबसे-गुमशुदा मेरा
अब कभी तुम जो आईना देखो

क्या अजब बोल ही पडे पत्थर
अपना किस्मा उसे सुना देखो

दोस्ती उस की निभ नहीं सकती
दिल न माने तो आजमा देखो

अजनबी हो गये शनासा लाग
वक्त दिखलाये और क्या देखो

जिन्दगी को शिकस्त दी गाया
मरने वालो का हीसरा देखो

खुदगरज है ये वस्तियाँ 'महमूर'
तुम भी अपना बुरा-भला देखो

न रस्ता न कोई डगर है यहा
 मगर सब की किस्मत सफर है यहाँ
 छिड़ी है वहम सुखरुई की जग
 लहू में हरिक चेहरा तर है यहाँ
 जवाँ पर जिसे कोई लाता नही
 उसी लपज का सब को डर है यहा
 जीये जायेगे झठी खबरो प'लोग
 यही एक सच्ची खबर है यहाँ
 हवाओ की उगली पकड कर चलो
 बसीला यही मोतबर है यहा
 न इस गहरे-बेहिस को सहरा कहा
 मुनो ! इक हमारा भी घर है यहा
 पलक भी झपकते हा 'मरमूर' क्यू
 तमाशा बहुत मुरतसर है यहा

सुखरुई = विजय बसीला = माशयम मोतबर = विश्व
 मनीम गहर बहिस = सब नागुप नगर मुरतसर = सतिपत

हर दरीचे मे मिरे कल्ल का मजर होगा
 शाम होगी तो तमाशा यही घर घर होगा
 पल की दहलीज़ प'गिर जाऊंगा वेमुघ हो कर
 योझ सदियों की थवन का मिरे सर पर होगा
 मैं भी इव जिस्म हूँ, माया तो नहीं हूँ तेरा
 क्यू तारे हिच्च म जीना मुझे दूभर होगा
 अपनी ही आंच मे पिघला हुआ चाँदी का वदन
 सरहदे-लम्स तक आते हुए पत्थर होगा
 लोग इस तरह तो शकलें न बदलते होंगे
 आईना अब उमे देखेगा ता शशदर होगा
 सर पटकते है बगोले वही भाँजो की तरह
 अब जो सहरा है किसी दिन ये समु'दर होगा
 दशते-तदवीर मे जो छाक-ब-सर है 'मरूमूर'
 हो न हो मेरा ही आवारा मुकद्दर होगा

दरीचे=खिडकी द्विच=वियोग सरहदे=लम्स=स्पर्श का सीमा
 शग'र=प्रचम्मित बगोले=घूल के बबण्डर दशत तदवीर=
 प्रयात का जगल छाक ब-सर=हृतात शीत से रोता पीटता

हृद्य कभी अपना हवाओ का बदलना भी पडा है
 सरफिरा कोई परिन्दा जब हवाओ से लडा है
 किन गुजरते मौसमो का मसिया में सुन रहा हूँ
 फिर ये किसका नाम लेकर पेड से पत्ता झडा है
 जब वो जिन्दा था तो इक छोट से बंद का आदमी था
 आज चौराहे प' जिसका देवकामत बुत गडा है
 खुशनुमा है ताज जो बटशा गया है, मुझको लेकिन
 काम मेरे आ नही सकता कि मेरा सर बडा है
 पीछे मुड-मुड कर निगाहे गुमशुदा मजर को ढूँढे
 दाये-बाये कुछ नही है, सामने पर्दा पडा है
 सहल समझे थे गुजर जाना मसरत की तलब से
 अहले गम ने अब ये जाना मरहला ये भी कडा है
 मुनअकिस है जिसमे ऐ 'मटमूर' अक्से-गुल कही मे
 आहनी दीवार मे ये आईना किसने जडा है

मसिया=मृत्यु गीत देवकामत=राक्षस का सा खुशनुमा=मनोरम गुमशुदा मजर=
 छोये हुए रथ महल=सरल मसरत=प्रसन्नता तलब=याचना मरहला=
 मोठ मुनअकिस=प्रतिबिम्बित अक्से गुल=गुल की प्रतिछाया आहनी=लोह की

लड पडे वेवात भी, होता रहा ऐसा बहुत
हम भी कम मरकश न थे, खुदमर जो थी दुनिया बहुत
अपने मिट्टी के चदन मे हूँ अभी सिमटा हुआ
जर्जा-जर्जा हो के मैं विखरा तो फलूंगा बहुत
कोई मेहमाँ आ रहा है ताजा हगामे लिये
चदला चदला है पुराने शहर या नकशा बहुत
तेरी परछाईं नजर आ आ के खो जाती रही
जिन्दगी की भीड मे हम ने तुझे ढूढा बहुत
इस तरफ से जाने कितने काफिले आये गये
अब मफर मुश्किल नही, हमवार है रस्ता बहुत
तू कोई साया है या ठडी हवा, दुनिया ने क्यू
चिलचिलाती धूप मे रस्ता तिरा देखा बहुत
देख लो 'मरमूर' इन मे अपना परती भी कही
अक्स हैं चेहरो के आईना-दर-आईना बहुत

सरकश = बिगोही खदसर = मनमानी करने वाली जर्जा जर्जा = कण कण
परती = प्रतिछाया अक्स = बिम्ब आईना दर-आईना = दपण अपण

राता का अधेरा ही अब दिन का उजाला है
 ऐ शहरे-हवम तेरा सूरज भी तो काला है
 किस्मत की लकीरे इस कोशिश में हुईं जख्मी
 गिरते हुए इक घर को हाथों प' मभाला है
 सूरज की बुलन्दी से कुछ सगे-सदा फटा
 यूँ रात का सन्नाटा कब टूटने वाला है
 मिट-मिट के उभर आये, कुछ और निखर जाये
 तस्वीरे-तमन्ना का हर रंग निराला है
 अश्वो के दिये सूने ताका प' हमी रख दे
 वीरान बहुत दिन से यादों का शिवाला है
 खुद अपना लहू पीना, मरने के लिए जीना
 ऐ हमनफसो तुम ने क्या रोग ये पाया है
 'मरमूर' ये मूरत किस मंदिर से निकल आई
 चाँदी का वदन, सर पर सोने का दुशाला है

शहरे हवस = वासना का नगर सगे सदा = धावाज का परपर तस्वीरे तमन्ना =
 इच्छा का चित्र ताको = दीवार में बना हुआ छोटा मेहराबदार खोल हमनफसो = मितो

16 पङ्क्ति गिरता हुआ

वहार लौट ही आई तो क्या कि तू ही न था
 नजर को जौके-तमाशा-ए-रगो-बू ही न था
 अबस किसी से थी हुस्ने-कबूल की उम्मीद
 हमे सलीक-ए-इश्हारे-आरजू ही न था
 फिर उस सफर का तो लाहासिली ही हासिल थी
 कदम किसी का सरे-राहे-जुस्तजू ही न था
 अब उस नजर ने भी आखिर यही गवाही दी
 कि चाक दामने-दिल काबिले-रफू ही न था
 कुछ और लोग भी थे जो हमे अजीज़ रहे
 सबब हमारी उदासी का एक तू ही न था
 सबब कुछ उस के तगाफुल का पूछते उस से
 रहा ये रज कि वो शरस रुबरू ही न था
 जला दरदत थी अपनी भी जिन्दगी 'मरमूर'
 रगो मे जिस की कोई जखव-ए-नमू ही न था

जौक तमाशा ए रगो बू = रग और गध को देखने की छवि भवस = ध्यर्ष्य हुस्ने कबूल =
 धडा से स्वीकृति सलीक ए इश्हारे आरजू = आकांक्षा की अभिव्यक्ति का सुषणन
 लाहासिली = अप्राप्य हासिल = प्राप्य सरे राहे जुस्तजू = खोज की राह पर दामने
 दिल = दिल के दामन का पटा हुआ भाग काबिले रफू = रफू के योग्य
 अजीज़ = प्रिय तगाफुल = उपेक्षा जखव ए नमू = विकसित होने की भावना

नजरा से साहिला के नजारे निहाँ हुए
 गहरे समुन्दरा में सफ़ीने रवाँ हुए
 गुजरी तमाम उम्र खुद अपनी तलाश में
 हम खुद ही अपनी राह के सगे-गिराँ हुए
 था हम से तेजगाम बहुत कारवाने-बकत
 हम रपता-रपता गर्दे-पमे-कारवाँ हुए
 ताबीर की तलाश में खुद खो गये हैं हम
 देमे थे जितने ख्वाब सभी रायगा हुए
 आईन-ए-नजर में था किन मजिला का अक्स ।
 हम को गुबारे-राह प' क्या-क्या गुमा हुए
 'भरमूर' मेरी खानाखराबी गवाह है
 वा मेरे घर में आये, मिरे मेहमाँ हुए

साहिलों=किनारा निहाँ=छप जाना सफ़ीने=नाबें रवाँ=रवाना सगे
 गिराँ=भारी परवर तेजगाम=शीघ्रगामी कारवाने बकत=समय का
 कारवा रपता रपना=धीरे धीरे गर्दे पसे कारवाँ=कारवा के पीछे की
 धून ताबीर=फल रायगाँ=अव्यय आईन ए नजर=दर्शक का दर्शन
 अक्स=प्रतिबिम्ब गुबारे राह=राह की धूस खानाखराबी=घर की खराबी

जा ये शर्तें—तअल्लुक है, कि है हम को जुदा रहना
तो रवावो मे भी क्यू आओ, रायालो मे भी क्या रहना
पुराने रवाव पलको से झटक दो, सोचते क्या हो
मुकद्दर खुशक पत्तो का है शाखो से जुदा रहना
शजर जटमी उमीदो के अभी तक लहलहाते हैं
इहे पतझड के मौसम मे भी आता है हरा रहना
कभी गुजरेगा इन गलियो से इक सैले-बला यारो
ये मिट्टी के मका ढह जायगे सब, इन मे क्या रहना
गुजरते रोजो-शब के दर्मियां ये वेहिसी मेरी
किसी पत्थर का जैसे बीच रस्ते मे पडे रहना
लहू रोती हुई आँसो मे हसरत तुझ को पाने की
सुलगते पानियो मे इक लरजते अवस का रहना
अजब क्या है अगर 'मटमूर' तुम पर यूरिशे—गम है
हवाओ की तो आदत है चिरागो से खफा रहना

शर्तें तअल्लुक—सम्बन्ध की शर्तें खुशक—शुभ शजर—पेड़
सैले बला—विपत्ति की बाढ़ रोजो शब—दिन रात वेहिसी—
सबदन शून्यता अवस—प्रतिबिम्ब यूरिशे ग्रम—दुखो का हमला

बीते मासम जा साथ लाती ह
 वा हवाय विधर म आती है
 घर मे क्या मर के लिये निरल
 गनके अब तो दिल दुखाती है
 दूर तर तुम्ह मे हा गय तो खुला
 कुत्रते फामला बढ़ाती हैं
 दिन निषलता नजर नही आता
 और रात गुजरती जाती है
 राशनी मे भटकने वालो को
 जुल्मते रास्ता दिखाती है
 जो भूला दी मभी ने ऐ 'महमूर'
 मुझ को बात को याद आती ह

बबर्ते = सामीप्य का बहुवचन जल्मर्ते = प्रघरे

वसे वसाये परिन्दा के घर उजडने लगे
 कि आँधियो मे जडो से दरस्त उखटने लगे
 सुलगते दशत मे चशमा कही नही फूटा
 और ऐसी प्याम कि मव ऐडियाँ रगडने लगे
 अना के हाथ मे तलवार किस ने दे दी थी
 कि लोग अपनी ही परछाइयो मे लडने लगे
 लहू का सैल वो फिर वस्तियो की सम्त बढा
 वो जगलो मे दरिन्दे कही भगडने लगे
 जो मजिलें ह तिरी, सर तुभी को करनी है
 गिला न कर, कि तिरे हम सफर विछडने लगे
 तिरी तलव की ये रातें, ये ख्वाव कैमे है
 कि रोज नीद मे हम तितलिया पकडने लगे
 घडी जवाल की आई तो दफअतन् 'मटमूर'
 बने बनाये सभी सिल्लिले विगडने लगे

दशत=जगन अना=भर सल=बाढ़ सम्त=घोर
 तनव=आकाशा उवान=पतन दफअतन्=प्रधान

एक अहसासे-जियाँ, लम्हा-व-लम्हा क्या है
 सोचता हूँ मिरे इमरोज का फर्दा क्या है
 कोई मज्दर है न आवाज़, तमाशा क्या है
 किस ने डाले हैं ये पर्दे ? पसे-पर्दा क्या है
 कभी रोशन, कभी तारीक, फजा इस घर की
 ताके-दिल मे कभी जलता, कभी बुझता क्या है
 हर कदम, पाँव के नीचे से निकलती-सी जमी
 दम-व-दम, हाथ से जाती सी ये दुनिया क्या है
 अक्स इस आईने मे कोई निखरता ही नहीं
 दर्मियाने-दिलो-दुनिया ये धुआ-सा क्या है
 म, कि हर चेहरे मे खुद अपना ही चेहरा देख्
 अजनबी भीड से यारी मिरा रिश्ता क्या है
 ये हवायें तारे हाथ आ न सकेगी 'भरमूर'
 तू सदा वन के तआकुव मे लपकता क्या है

अहसासे जियाँ = हानि की अनुभूति लम्हा व लम्हा = क्षण प्रति क्षण इमरोज = आज
 वत्तमान पर्दा = भविष्य मज्दर = दृश्य पसे पर्दा = पर्दे के पीछे तारीक = अंधेरी
 ताके दिल = विल के मोखल दम व दम = पल पल सस सस अवन = प्रतिबिम्ब
 दर्मियाने दिलो दुनिया = आन्तरिक और बाह्य के बीच तमाकुव = पीछा करना

मुतजिर उस का कोई खुद उस के घर मे रह गया
वो मुसाफिर था किसी लम्बे सफर मे रह गया

आस्मा-पैमा इरादा, बालो-पर मे रह गया
हर परिन्दा कुछ जमीनो के असर मे रह गया

यू तो जो पाया सफर मे, सब सफर मे रह गया
रास्ते का आखिरी भजर नजर मे रह गया

जा बसा जोडा परिन्दो का तो अब जाने कहा
घोसला उलझा हुआ शाखे-शजर मे रह गया

तू नही लेकिन तिरा परती इस उजडे दिल मे है
जलता बुझता इक दिया सूने खण्डर मे रह गया

रग सब उस की नजर के, आसुओ मे बह गये
लेकिन इव खुशबू का चेहरा चश्मे-तर मे रह गया

मजिला के द्वाब ऐ 'मरमूर' अधूरे ही रहे
काफिला खो कर तिलिस्मे-रहगुजर मे रह गया

नी खु

क्यो

नालग

नी

मन्दिर=प्रतापित पासमा पैमा इरादा=आशा नापने का इरादा
बालो पर=पंथ और उनके नीचे के बाल शाख नजर=पेड़ की टहनी
परती=प्रतिबिम्ब चश्म तर=शेकी और तिलिस्मे रहगुजर=राह का रहस्य

बन सकें जो दिले-रुस्वा के सहारे कम हैं
 है शनासा तो बहुत दोस्त हमारे कम हैं
 जिन्दगी जैसे गुजार आये हा, आलम ये हैं
 यू तो दिन हम ने तिरे साथ गुजारे कम हैं
 थे सफीने तो बहुत पार उतरने वाले
 नाखुदाओ ने मगर पार उतारे कम हैं
 है गजब शोखी-ए-तस्वीरे तमना हरचद
 हम ने दानिस्ता कई रग उभारे कम है
 बहुत आवाज प' आवाज तो देने वाले
 दिल मगर खुद ही जिन्हे बढ के पुकारे कम है
 खेल समझा न तिरे प्यार का हम ने बरना
 हम कोई खेल जो खेले है तो हारे कम हैं
 मौत का कोई बहाना नहीं मिलता 'मटमूर'
 और जीना हो तो जीने के सहारे कम है

दिले रुस्वा = बदननाम तिन शनासा = परिचित सफीने = नाचें
 नाखुदाओ = नातिकों शोखा ए तस्वीरे तमना = इच्छा रूपी
 चित्र की चंचलता हरचद = यद्यपि दानिस्ता = जान बूझकर

पे-व-पे सम्ते-सफर अपनी बदलता क्यूं है
 चलते रहना है तो रुक-रुक के सभलता क्यूं है
 तेरे माजी की हर उलभन, तिरा अपना साया
 अपने ही साये से कतरा के निकलता क्यू है
 कब सरे-आवे-रवा, नकश किसी का ठहरा
 मौज दर मौज ये इक अक्स मचलता क्यू है
 तितलियाँ है ये मुलाकात की रगी घडिया
 रग उड जायेगा, पर इन के कुचलता क्यूं है
 नम हवाओ मे है किस गम वदन की खुशबू
 मद भोको मे ये शोला भा निकलता क्यूं है
 आगे इम मोट के, रस्ता हो न जाने कँसा
 दफअतन् आ के यही पाव फिसलता क्यूं है
 वच सका कुछ भी न जब कहरे-हवा मे 'मदमूर'
 इक दिया आस की चौखट प' ये जलता क्यूं है

पे व पे=निरतर सम्ते-सफर=यात्रा की दिशा माजी=अनीत
 सरे आवे रवाँ=बहते हुए पानी पर नकश=निशान मौज दर मौज=सहर
 परसहर नम=भाइ दफअतन्=अचानक कहरे-हवा=हवा की विपदा

पेड गिरता कोई नजर आया
 दिल घने जगलो का भर आया
 महफिलो महफिलो प' खामोशी
 विस का अफसाना खत्म पर आया
 रास्ते मे रुकावट थी बहुत
 मे हवा की तरह गुजर आया
 रात उतरने लगी है गलियो म
 दिन का दुख इतितताम पर आया
 इक परिदा, हवा का हमपरवाज
 मेरे आगन मे क्यू उतर आया
 गमे-जाना की आहटे उभरी
 दिले-तन्हा का हम सफर आया
 आज उस से विछड के ऐ 'मरमूर'
 दिल बहुत गमजदा नजर आया

इतितताम = समाप्त हमपरवाज = साथ उडान भरने वाला गमे जाना =
 प्रियतम का दुख निने तन्हा = भवेला दिल शमजदा = दुख से भरा

भीड़ में है मगर अकेला है
 उस का कद दूसरो से ऊचा है
 अपने अपने दुखो की दुनिया में
 मैं भी तन्हा हूँ वो भी तन्हा है
 मजिले गम की तै' नही होती
 रास्ता साथ साथ चलता है
 साथ ले लो सिपर मुहब्बत की
 उस की नफरत का वार सहना है
 तुम्ह से टूटा जो इक तअल्लुक था
 अब तो सारे जहाँ से रिश्ता है
 खुद से मिल कर बहुत उदास था आज
 वो जो हँस हँस के सब से मिलता है
 उस की यादें भी साथ छोड गईं
 इन दिनो दिल बहुत अकेला है

तन्हा=अकेला सिपर=बाल

न एक पल सरे-दशते-तर्पा रके बादल
 हवा के दोश प' उडते चले गये बादल
 मुलगती शाम के दर पर उदासियों का नजूल
 धुवाँ-धुवाँ सी फिजाये भुवे-भुवे बादल
 सिमट के खुद मे वही दूर जा टिपा सूरज
 उफक से ता-ब-उफक फलने लगे बादल
 ये आस्माँ कोई सादा सलेट है जिस पर
 बना के नित नई शकले मिटायेगे बादल
 उधर थी धूप जिधर वस्तिया थी फूला की
 उजाड समती प' साया किये रहे बादल
 बिसर के रह गये मौजे-गुवार की मानिद
 उलभ पडे थे हवाओ से सरफिरे बादल
 जमी की प्यास बुझाने उठे मगर 'मरमूर'
 समुन्दरो ही प' जा कर बरस पडे बादल

सर दशते तर्पा = जलना हुआ जगल दोश = कथा दर = दरवाजा नजूल = उतरना
 ता ब उफक = क्षितिज से क्षितिज तक समती = दिशाओ मौजे गुवार = धूल की लहर

दीवारो-दर को गद का बादल निगल गया
 आधी चली तो शहर का मजर बदल गया
 आया था किस तरफ से वो अजोहे-आरजू
 क्यू दिल का रोदता हुआ आगे निकल गया
 हद्दे-निगाह तक कही अब रोशनी नहीं
 सर से तिरे खयाल का सूरज भी ढल गया
 पाया उसे तो अपने खतो-खाल भो गये
 कुवत का आईना मिरा चेहरा निगल गया
 थी रोशनी की नम खिरामी भी हृश्य-खेज
 आये वो जलजले कि अघेरा दहल गया
 था सद्दे-राहे-शौक जो मजिल के नाम पर
 ठोकर मिरा लगी तो वो पत्थर पिघल गया
 'मरमूर' उमी की याद का परती है, हो न हा
 दिल मे ये इक दिया जो सरे-शाम जल गया

दीवारो दर=दीवार और दरवाजा गद=घूल अजोहे आरजू=आवाशाओ
 की भीड़ हद्द निगाह=दृष्टि की सीमा खतो खाल=तिल और चमड़ी-
 नन नक्श कवत=सामीप्य खिरामी=धीमेचलना हृश्य खेज=
 प्रलयकारी सद्दे राहे शौक=प्रेम भाग का अवरोध परती=प्रतिच्छाया

सामने गम की रहगुजर आई
 दूर तक रोशनी नजर आई
 परवतो पर रके रहे वादल
 वादियो मे नदी उतर आई
 दूरियो की वसक बढाने को
 साअते-कुवं मुहत्तर आई
 दिन मुझे कल कर के लीट गया
 शाम मेरे लहू मे तर आई
 मुझ को कब शौके-शहरगर्दी था
 खुद गली चल के मेरे घर आई
 आज क्यों आईने मे शकल अपनी
 अजनबी अजनबी नजर आई ?
 हम कि 'महमूर' सुब्ह तक जागे
 एक आहट कि रात भर आई

सामने कब = मामीप्य का लक्षण मुहत्तर =
 सक्षिप्त शौके शहरगर्दी = नगर मे घूमने का शौक

पार करना है नदी को तो उतर पानी में
 बनती जायेगी सुद इक राहगुजर पानी में
 जोके-तामीर था हम खानाखराबो का अजब
 चाहते थे कि बने रेत का घर पानी में
 सैले-गम आँखो से सब कुछ न बहा ले जाये
 डूब जाये न ये खाबो का नगर पानी में
 कश्तिया डूबने वालो के तजस्सुस में न जाय
 रह गया कौन, खुदा जाने बिघर पानी में
 अब जहा पाँव पड़ेगा यही दलदल होगी
 जुस्तजू खुशक जमीनो की न कर पानी में
 मौज दर मौज, यही शोर है तुगयानी का
 साहिलो की किसे मिलती है खबर पानी में
 खुद भी बिग्वरा वा, बिखरती हुई हर लहर के साथ
 अबस अपना उसे आता था नजर पानी में

राहगुजर=रास्ता जीव तामीर=निर्माण की कृति खानाखराबा=बेघरवा
 सैले गम=दुख की बाढ तजस्सुस=छोज जुस्तजू=तलाज छ बफ=शुष्क मौ
 दर मौज=सहर पर लहर तुगयानी=तूफान साहिलो=किनारो अबस=बि

सर पर जो सायवाँ थे पिघलते है धूप मे
 सब दम-ब-खुद खडे हुए जलते है धूप मे
 पहचानना किसी का किसी को, कठिन हुआ
 चेहरे हजार रंग बदलते है धूप मे
 बादल जो हमसफर थे कहा खो गये कि हम
 तथा सुलगती रेत प' जलते है धूप मे
 सूरज का कहर टूट पडा है जमीन पर
 मजूर जो आस पास थे जलते है धूप मे
 पत्ते हिले तो शाखो से चिंगारियाँ उडे
 सर सब्ज पेड आग उगलते है धूप मे
 'मरूमूर' हम को साय-ए-अब्रे-रवा मे क्या
 सूरजमुखी के फूल है, पलते है धूप मे

सायवाँ=साया करने वाले दम ब खुद=मौन कहर=प्रकोप
 सब्ज=हरे भरे साय ए अब्रे रवा=वर्षिणील बादल की छाया

सुन सवा कोई न जिस को, वो सदा मेरी थी
 मुफइल जिस से मैं रहता था नवा मेरी थी
 आतिरे-शब के ठिठरते हुए सन्नाटा से
 नग्मा बन कर जो उभरती थी, दुआ मेरी थी
 खिलखिलाती हुई सुब्हा का सर्मा था उन धा
 खून रोती हुई शामो की फजा मेरी थी
 मुद्दा मेरा, इन अल्फाज के दपतर मे न हूढ
 वही एक बात, जो मैं वह न सका मेरी थी
 मुसिफे-शहर के दरवार मे क्यू चलते हो
 साहिवो मान गया मैं कि खता मेरी थी
 मुझ से बचकर वही चुपचाप सिधारा 'मटमूर'
 हर तरफ जिस के तआकुब मे सदा मेरी थी

मुफइल=लज्जित नवा=आवाज आतिरे शब=रात का अंतिम भाग
 मुद्दा=मतलब मुसिफ शहर=नगर के वायाघीश तआकुब=पीछा करना

अल्फाज में अहसास को ढाला नहीं जाता
 मैं चुप हूँ, मगर सर से ये सौदा नहीं जाता
 क्या मजरे-पुरहौल मिरे चारो तरफ है
 आख तो खुली रखता हूँ देखा नहीं जाता
 है कब से उसी शहर की जानिव सफर अपना
 जिस शहर की जानिव कोई रस्ता नहीं जाता
 चलती हैं जिलों में कई बेकार उम्मीदे
 दिल उस की तरफ जाये तो तन्हा नहीं जाता
 मेरी ही तरह कैद है, खुद अपनी फज्जा में
 उस तक मिरी आवाज का शोका नहीं जाता
 इक घुघ भरे मोड़ प' हम मिल तो गये है
 खो जायेंगे फिर, दिल से ये घडका नहीं जाता
 'भटमूर' न महमिल न कही लैली-ए-महमिल
 "भजनू कोई अब जानिवे-सहरा नहीं जाता"

भटमूर=शहर अहसास=सवेदना सौदा=उम्मा मजरे पुरहौल=इरादता इय
 जानिव=घोर जिलों=सातघ्य महमिल=ऊँट पर स्त्रियों के बठने का बजावा
 लैली ए महमिल=लला का बजावा जानिवे सहरा=सहरा रेगिस्तान की ओर

गमो-निशात की हर रहगुजर मे तन्हा हूँ
 मुझे खबर है, मैं अपने मफर मे तन्हा हूँ
 मुझी प' सगे-मलामत की वारिशे होगी
 कि इस दयार मे शोरीदासर मैं तहा हूँ
 तारे खयाल के जुगनू भी साथ छोड गये
 उदास रात के सूने खडर मे तन्हा हूँ
 गिगों नही है किसी पर ये रात मेरे मिवा
 कि मुव्तला म उम्मीदे-सहर मे तन्हा हूँ
 वो बेनियाज, कि देखी हा जैसे इक दुनिया
 मुझे ये नाज, मैं उस की नजर मे तन्हा हूँ
 मुझी मे न्यू है खफा मेरा आईना 'मटमूर'
 इस अरे शहर मे क्या खुदनगर मैं तहा हूँ

गमो निशात=आनन्द और दुख सगे मलामत=भक्तता के पत्थर दयार=
 दुनिया शोरीदासर=गीबाना विकृत मस्तिष्क वाला पिराँ=बोध
 मुव्तला=फसा हुआ उम्मीदे सहर=सुद की भाशा खदनगर=प्रात्मविस्मृत

5 पड गिरता हुआ

जल थल सहारा खुश्व ममुन्दर रखते हैं
आँखों में हम क्या-क्या मजूर रखते हैं
खाना बर्बादी में हमारा नाम भी लिख
शहर में तेरे हम भी इस घर रखते हैं
उजने खुश पोशाक बदन इस बस्ती के
मैली रूहे अपने अदर रखते हैं
रस्ते सब चल पड़े किधर वो क्या जानें
पाव ही क्या वो घर के बाहर रखते हैं
तपते भोके आ कर ठंडे बागों में
फूनों के सीनों पर सजूर रखते हैं
सब से झुक् कर मिलना अपनी आदत है
कद अपना हम सब के बराबर रखते हैं
सहरा-महरा सरगरदाँ है ऐ 'मखमूर'
हम भी बगूला जैसा मुकद्दर रखते हैं

खाना बर्बादी = बेघरबार लोगों उजने पल पोशाक = धवल वस्त्र रूहे =
मात्माएँ सहारा-सहरा = रेगिस्तान रेगिस्तान सरगरदाँ = धूमते रहने वाला

समझ न लम्ह-ए-हाजिर का वाकआ मुझ को
 गये दिनो का मैं किस्सा हूँ भूल जा मुझ को
 वो कौन शरत्स था कुद्य दम-ब-खुद-सा, हैरा-सा
 जो आईने मे खडा देखता रहा मुझ को
 पुकारते थे कई नक्शे-ना तराशीदा
 सकूते-सग से आती थी इक सदा मुझ को
 हुआ न सिलिसल-ए-दद मुतशिर मुझ से
 कि साथ अपने बिखरने का खीफ था मुझ को
 समझ सके जो न मेरी खमोशियो की जवाँ
 मैं सोचता हूँ कि ऐसो ने क्या सुना मुझ को
 मैं आप अपनी खमोशी की गूँज मे गुम था
 मुझे खयाल नहीं, किस ने क्या कहा मुझ को
 मैं अपना मद्दे-मुकाबिल था आप ही 'मरमूर'
 कदम कदम प' हुआ मेरा सामना मुझ को

लम्ह ए हाजिर=वर्तमान वाकआ=घटना दम ब खुद सा=मौन नक्शे ना तरा
 शीदा=बिना तरशी हुं प्राकृति सकूते सग=परपर ब मौन सिलिसल ए दद=
 दद का सिलिसला मुतशिर=खिन भिन मद्द मुकाबिल=सामने दटने वाला

ये कँसा रब्त हुआ दिल को तेरी जात के साथ
 तिरा खयाल अब आता है वात वात के साथ
 कठिन था मरहल-ए-इतिजारे-सुब्ह बहुत
 बसर हुआ हूँ मैं खुद भी गुजरती रात के साथ
 पडी थी पा-ए-नजर मे हजार जजीरें
 बघा हुआ था मैं अपने तवहुम्मात के साथ
 जुलूसे-बकत के पीछे रवाँ मैं इक लम्हा
 कि जैसे कोई जनाजा किसी वरात के साथ
 कभी-कभी तो ये होता है जैसे ये दुनिया
 बदल रही हो मिरे दिल की वारदात के साथ
 जो दूर से भी किसी गम का सामना हो जाय
 पुकारता है मुझे कितने इस्तिफात के साथ
 तडख के टूट गया दिल का आईना 'मरमूर'
 पडा जो अक्से-फना परतवे-हयात के साथ

रब्त = सम्बन्ध जात = व्यक्तिस्व मरहल ए इतिजारे सुब्ह = प्रातःकाल
 की प्रतीक्षा का समय पा ए नजर = रीष्ट के पलों में तवहुम्मात =
 सशयो जुलूसे बकत = समय के जुलूस रवाँ = चलनेवाला इस्तिफात =
 कृपा अक्से फना = मौत का प्रतिबिम्ब परतवे हयात = जीवन के बिम्ब

चढ़ते दरिया से भी गर पार उतर जाओगे
 पाँव रखते ही किनारे प, बिखर जाओगे
 वक्त हर मोड़ प' दीवार गडी कर देगा
 वक्त की कँद से घबरा के जिघर जाओगे
 खानाबर्वाद समझ कर हमे ढलती हुई रात
 तज से पूछती है कौन से घर जाओगे
 सच कहो शाम की आचारा हवा के भोको
 उम की खुशबू के तआकुब मे किघर जाओगे
 नक्शे-इमरोज से आगे न निगाहे दीडाओ
 कल की तस्वीर जो देखोगे तो डर जाओगे
 मैं भी साया हूँ सियह रात मे खो जाऊँगा
 तुम भी इक रवाब हो पल भर मे बिखर जाओगे
 रास्ते शहर के सब बन्द हुए है तुम पर
 घर से निकलोगे तो 'मटमूर' किघर जाओगे

खानाबर्वाद = जिसके घर न हा तज = व्यर्थ तआकुब =
 पीछा करने नक्शे इमरोज = बतमान के बिहू

१०३



दायरो के कैदी

नये नये दायरे बनाते रहे हम तुम

कि मुद्दतो से

ये दायरो का तिलस्म तश्कीने-कायनाते-बशर की

पहचान बन चुका है

हमारा ईमान बन चुका है

ये दायरे जिन्दगी को तकसीम करके अब आदमी को

तकसीम कर रहे है

मैं अपना दायरा बनाये हुए इसी मे घिरा खडा हूँ

तुम अपना इक दायरा बनाये हुए इसी मे घिरे खडे हो

और इन जुदागाना दायरो मे भी और कितने दायरे है

इही तिलस्माती दायरो मे बटी हुई है हमारी हस्ती

निगह इस दायरे मे महबूस है दिल उस दायरे का कैदी

अजीब जाँकाह पेच-दर-पेच सिलसिला है

न मुझ मे हिम्मत रही है, इतनी न तुम मे ये हीसला रहा है

कि इस मुद्बवर तिलस्म से दो घडी को बाहर निकल के देखे

खुली फिजा मे, हवा के झोको के साथ कुछ दूर चल के देखे

जमीन कितनी वसीअ, कितनी बडी है अब तक

तिलस्म=जादू तश्कीने कायनाते बशर=मानव सृष्टि की रचना तकसीम=
घांटना जुदागाना=अलग अलग हस्ती=जीवन महबूस=बगी जाँकाह=
हृदयद्रावी पेच दर पेच=जटिल मुद्बवर=वृत्ताकार बसीअ=विस्तृत

हृदयदियो

तुम्हारी मेरी नजर की हृदयदियो से बाहर
उफक की मिटती हुई लकीरो के आगे आगे
ये दिलकुशा, दिलफरोज वुसअत
यहा मुझे भला या तुम्हे भला उसकी क्या जरूरत
अलग-अलग तगो-तार से दायरे बनाये हिसार खीचे
कभी-कभी खुद हमारे अन्दर से एक आवारा लहर उठती है
और हम से ये पूछती है
ये दायरो का तिलिस्म क्या है ?
नजर का घोका है वाहिमा है
मगर न मुझ मे रही है हिम्मत, न तुम मे ये हीसला रहा है
कि इस मुदव्वर तिलिस्म से दो घडी को बाहर निकल के देखें
खुली फिजा मे, हवा के भोको के साथ
कुछ दूर चल के देखें

हृदयदियो=सीमा निश्चित करने का निशान उफक=
क्षितिज दिलकुशा=रमणीय दिलफरोज=दिल को
प्रभावमान करने वाला धुमन्न=विस्तार तगो तार=
सकीण और अघकारमय हिसार=परकोटा वाहिमा=ध्रम

खराबे मे

शहर मे दूर, बयावान की त हाई मे
सहरपरवर, ये पुरअसरार पुराना मदर
अपने सीने मे छुपाये हुए सदियो का सुकूत
चादनी रात मे इस तरह से एस्तादा है
पँकरे-ह्वावे गिरां हो जैसे

देवताओ का ये उजडा हुआ मसकन, जिसके
ताको-मेहराबो-दरो-वाम शिकस्ता हो कर
इतिक्का-ए-बशरीय्यत का पता देते है
नुकरई धु घ मे लिपटा हुआ यूं लगता है
कोई गुमगश्ता जहा हो जैसे

ताको-मेहराबो-दरो-वाम के सूनेपन को
सनसनाती है हवायें, तो बढा देती है
कोई पायल, कोई धुघरू, कोई मकार नही
फिर भी छ्वाबीदा फजाओ का सकूते-सीमी
गु ग माजी की जवा हो जैसे

बयावान=अरण्य सहरपरवर=जादू जगाने वाला पुरअसरार=रहस्य से भरा
सुकूत=शांति एस्तादा=घडे पकरे ह्वावे गिरां=भारी स्वप्नाकृति मसकन=
पर ताको मेहराबो दरो वाम=ताऊ मेहराब दरवाजा और छत शिकस्ता=
भग्न इतिक्का ए बशरीय्यत=मानवता के विनाश नुकरई=रजन गुमगश्ता=धोया
हुमा छ्वाबीदा=स्वप्निल सकूते सीमा=रजन शांति गुग=गूया माजी=घटीत

हम, कि आगोश मे रवाबीदा फजाओ की यहा
घडकने दिल की जगाने को चले आये है
हम, कि दोनो मे न दासी, न पुजारी कोई
इस प' यूँ हैरतो-हसरत से नजर करते है
रूहे-फर्दा निगराँ हो जैसे

हम से कुछ दूर, जरा दूर, वो हँसता हुआ चाँद
जान कर मजिले-फर्दा का मुसाफिर, शायद
खैरमकदम का हसी रग निगाहो मे भरे
टपटकी वाध के यूँ देख रहा है हम को
अपनी मजिल का निशाँ हो जैसे

रत्नम=नृत्य शब्दीदत्त=श्रद्धा सनमआवाँद=मूर्तियों की बस्ती जराँ जराँ=
कण कण प' ए घामोशी=चुप्पा का पर्दा शोरे फरियादों फर्गा=आत्मनाद
और परिवार का गोर घागोश=सक रवाबीदा=स्वप्नित हैरतो हसरत=
आश्चय और निराशा रूह फर्दा=भविष्य की आत्मा निगराँ=देखभाल
करने वाला मजिले फर्दा=भविष्य का गतव्य खैरमकदम=स्वागत

जादे-सफर

अजनवी चेहरो के फैले हुए इस जगल मे
दौडते भागते लम्हो वे दरीचे से कभी
इत्तिफाकन् तिरी मानूस शवाहत की झलक
पर्द ए-चश्मे-तखय्युल प'उभर कर ऐ दोस्त
डूब जाती है उसी पल, उसी साअत, जैसे
तेजरी रेल की खिडकी से, जरा दूरी पर
किसी सेहरा की झुलसती हुई वीरानी मे
नागहा मजरे-रगी कोई दम भर के लिये
इक मुसाफिर को नजर आये और ओझल हो जाये

जादे सफर=यात्रा की राह मानूस=परिचय
शवाहत=समानता प' ए चश्मे तखय्युल=कल्पना
की आँख का पर्दा साअत=पल तेजरी=टहन-
गामी नागहा=अचानक मजरे रगी=रगोन दाय

पनघट

गाँवों की फजाओं में, डोलती हवाओं में
नग्नगी मचलती है, मस्तिया सनकती है
इक शरीर आहट पर, पुरसुकून पनघट पर
गागरे छलकती है, चूडिया छनकती हैं
सिल्लिले रकावत के दूर तक पहुँचते हैं
जगखुर्दा तलवारे देर तक खनकती हैं

फजाओं=वातावरण का बहुवचन नग्नगी=
सगीतमयी आवाज पुरसुकून=शांतपूण
रकावत=प्रतिनिष्ठा जगखुर्दा=जग धाई हुई

आखिरी नोहा

मुझे यहाँ भेजने से पहले
ये मुझ से वादा किया था उस ने
कि वो मिरा गमगुसार होगा
जो दुख मुझे झेलना पड़ेगा वो उस प' सब आशकार होगा
मिरी निगाहो से दूर हो कर वो दिल से नज़दीकतर रहेगा
अकेलेपन की उदासियों के अज़ाब से बाखबर रहेगा
जहाँ सभी साथ छोड़ जायेंगे, आसरा उस की ज्ञात देगी
फना की तारीक वादियो ने मुझे शऊरे-हयात देगी

ये मुझ से वादा किया था उस ने
मगर मैं तन्हा भटक रहा हूँ
फना की तारीक वादियो मे मिरा कोई हमसफर नहीं है

आखिरी नोहा = विलाप गमगुसार = मित्र आशकार =
प्रकट अज़ाब = कष्ट ज्ञात = ध्वनित्व फना =
मृत्यु तारीक = प्रधरी शऊरे हयात = जीवन वा
विवक तहा = अकेला हमसफर = सद्वात्रा

किसी को मेरी उदासियों की, मिरे दुखों की खबर नहीं है
कोई नहीं है जो अब मुझे रास्ता दिखाये
जो दो कदम ही सही मगर मेरे साथ आये
मुझे बताये
कि वो कहा है
जो वादा कर के मुकर गया है
जो मुझ से पहले ही मर गया है

अजाम की तरफ

फराजे आस्मां पर सुब्ह दम कितना उजाला था
उफक के आईनों में ताज़ादम सूरज की किरने मुस्कुराती थी
फिजा को गुदगुदाती थी
किरन इक इक किरन मिजरावे साजे नूर थी गोया
परिन्दे शाखसारो में चहकते चहचहाते थे
सुहाने गीत गाते थे
भरा था आस्मां नग्माते-जांपरवर की तानो से
परिन्दो की उड़ानो से

मगर अब दम-ब-दम मज़र उजडता जा रहा है
हो रहा है आस्मा खाली
फिजा के आईनों में जितने रोशन अबस थे, सब बुझते जाते हैं
उजालो को थका मारा है दिन भर की मसाफत ने
थकन सूरज के चेहरे पर सियाही मलती जाती है
परिन्दे खस्तगी का ज़रम खा कर
शाम की अंधी गुफा में गिरते जाते हैं
हवा इक मातमी लहजे में पैगामे-दुरूदे-शव सुनाती है
खमोशी बढ़ती जाती है

अजाम = धरत फराजे आस्मां = आकाश की ऊँचाई उफक =
क्षितिज मिजरावे साजे नूर = प्रकाश वाद्य की मिजराव शाखसारो =
वर्षों के बाहुल्य का स्थल नग्माते जांपरवर = जीवन शक्ति बढ़ाने
वाले गीत नम ब दम = शरण प्रति शरण मसाफत = यात्रा
खस्तगी = थकन पैगामे दुरूदे शव = रात के सलाम का संदेश

शनीदा

सुना है मैं ने

नमूदे-मुद्दे-अजल का मजर बहुत हसी था

नजारा वो कितना दिलनशी था

किरन किरन रोशनी फलक को बुलदियो से उतर रही थी

जमी के जुल्मतकदे को रगीनियो से मामूर कर रही थी

सुना है मैं ने

कि इक जमाना था, खुदनुमाई के शौक मे जब

खुदा ने अपनी तजल्लियो से नकाब उलट दी थी

———— और गुनहगार आदमी ने

फरोगे-खुद आगही से अपने दिलो-नजर जगमगा लिये थे

सजा के हुस्ने-यकी की महफिल, चिरागे-ईमाँ जला लिये थे

सुना है मैं ने

कि मुझ से पहले जो लोग रहते थे इस जमी पर

(इसी कदीम आस्मा के नीचे)

वो मुत्मइन भी थे, शादमाँ भी

गुजरते लम्हो के राजदा भी

उन्हे खबर थी —————

शनीदा = सुना हुआ नमूदे मुद्दे अजल = पहले मुद्दे के होने फलक =
आकाश जुल्मतकदे = धकार के घर मामूर = भरा हुआ खनुमाई =
आत्म प्रदर्शन तजल्लियो = बिजलिया फरोगे खुदमागही = आत्म चेतना
की घोषा दिलो नजर = दृष्टि और मन हुस्ने यकी = अत्यधिक विश्वास
चिराग ईमाँ = धम पर दृष्ट विश्वास रूपी ज्वालि बुदीम = प्राचीन
मुत्मइन = सतुष्ट शादमाँ = प्रसन राजदा = रहस्यों को जानने वाले

कि जिन्दगी घूप छाँव का एक सिलसला है
 अजल से फैला हुआ है जो मजिले-अवद तक
 (तो वो अजल से भी आशना थे, उन्हे अवद से भी आगही थी)

सुना है मैं ने
 मगर मुझे आरजू रही है
 कि जिन्दगी का ये दौरे-जरीं
 कि आदमी का ये अहदे-रफता
 मैं अपनी आसो से देख सकता

अजल = सृष्टि के प्रारम्भ मजिले अवद = अतिम यतव्य
 आशना = परिचित अवद = अत आगही = चेतना
 दौरे जरीं = मुनहरा युग अहदे रफता = बीता हुआ युग

तिलिस्मे-आवो-गिल

शव की तारीकी मे एवावो का सफर
और अजब इक मजरे-सहरआफरी पेशे-नजर
काले-काले बादलो की सरसराती छाव मे
खिलमिलाते, शोख फलो की महवती क्यारियां
मौजे-खुशबू ए-रवा
मौजे खुशबू ए-रवा के साथ-साथ
एक लहराता पहाडी सिल्मला फला हुआ
दायरा दर दायरा
नूर की वरसात मे भीगी हुई नम चोटिया
मरमरी नम चोटियो के दमिया
कुछ अनोखी घाटिया
घाटियो मे मुन्अकिस

तिलिस्मे आवो गिल = मिट्टी और पानी का रहस्य तारीकी =
भ्रम घरे. मजर सहरआफरा = जादू करने वाले शय
पेशे नजर = दृष्टि के सामने शोख = खिल मौजे खुशबू
ए रवा = बहती खुशबू की लहर दायरा दर दायरा =
वक्त पर वक्त मरमरी = सफ मुन्अकिस = प्रतिबिम्बित

सात रंगों की उभरती डूबती रोशन घनक
 सीमगूँ ढलवान से नीचे उतर कर सब्ज झील
 झील में जलता कंवल
 साहिली शादावियों के आस पास
 शवनम आलूदा, मुलायम नम घास
 घास में इक शोलादम खूबवार साँप
 साँप की फुकार से इक गूना हलचल दायें-वायें
 दूर तक बहशी हवा की साय साय

सीमगूँ = रजत सब्ज = हरी शादावियों =
 किनारे की हरियाली शवनम आलूदा = ओस से
 भरी हुई शोलादम = आग जसी साँस वाला

आते जाते लम्हो की सदा

कल मैं बहुत ही अफसुर्दा था
जीने से बेजार हुआ था
मेरी नजर मे ———
ये दुनिया थी
बदसूरत, बीमार सी बुढिया
इस दुनिया को देख के मैं ने
कल जो कहा था
वो कल तक का ही किस्सा था

आज मैं खुश हूँ
आज तो सचमुच जीने का अरमान है मुझ को
आज ये दुनिया ———
मेरी नजर मे
नई नवेली सी दुल्हन है
इस दुनिया को देख के
मेरे होटो पर जो हर्फ खिले हैं
आज का अफसाना कहते हैं

अफसुर्दा = खिन्न

कल जाने क्या सोच हो मेरी
 कल ये दुनिया —————
 सामने मेरे
 क्या जाने किस शकल मे आये
 वक्त का रंग बदलता चेहरा —————
 अपना कौन सा रूप दिखाये
 कल शायद मैं इस दुनिया की नई कहानी
 किसी नये उर्वा से सुनाऊँ
 अपने कहे को खुद भुटलाऊँ

मैं कि फकत आते जाते लम्हो की सदा हूँ
 किस को खबर है कब मच्चा हूँ
 कब भूटा हूँ !

सफर का आखरी मजर

सफर पर चले थे तो सोचा था क्या कुछ ———
 कई रास्ते अपने कदमों से हम रौंद देंगे
 कई हमसफर हर कदम पर मिलेंगे
 रफाकत का नशशा
 सफर की थकन में कुछ इस तरह घुगता रहेगा
 मसाफत की दूरी को महसूस होने न देगा

सफर पर चले थे तो सोचा था हम ने
 कई मेहरजा बस्तिया रास्ते में पड़ेगी
 जो इस दिल की तहाइयो का मदावा करेगी
 गुजरते हुए कैफपरवर मराहिल
 निशाते-तलय की वो सौगात देंगे
 हवाओं के हाथों में हम हाथ दे कर चलेगे
 यूँ ही, नो-ब-नो, मुतजिर मजिलो की तरफ पाव उठते रहेगे

रफाकत=मिन्नता मसाफत=यात्रा मदावा=
 उपचार कैफपरवर=मानदित करने वाले
 मराहिल=भोज निशाते तलय=मानद की
 अभिभाषा नो ब नो=नये स नया मुतजिर=प्रतीक्षित

सफर पर चले थे तो सोचा था ——— लेकिन
 सफर पर चले थे तो सोचा कहा था
 ये मज्जर इन आखो ने उस वकत देखा कहा था
 न रस्ता कोई लडखडाती नजर मे
 न कत्अ-ए-मसाफत का सौदा है सर मे
 निशाते-तलब ही की सौगात कोई
 न उन खाली हाथो मे है हाथ कोई
 थकन से लरजते हुए पाँव वजर जमी मे गडे है
 जहा से सफर पर चले थे किसी दिन
 वही हम अभी तक अकेले खडे है

ब्रज ए मसाफत = यात्रा को बम करना निशाते तलब = खान-द की अभिलाषा

सफर का आखरी मजर

सफर पर चले थे तो सोचा था क्या कुछ ———
कई रास्ते अपने कदमों से हम रौंद देंगे
कई हमसफर हर कदम पर मिलेंगे
रफाकत का नशशा
सफर की थकन में कुछ इस तरह घुलता रहेगा
मसाफत की दूरी को महसूस हाने न देगा

सफर पर चले थे तो सोचा था हम ने
कई मेहरबा बस्तियाँ रास्ते में पडगी
जो इस दिल की तन्हाइयों का मदावा करगी
गुजरते हुए कैफपरवर मराहिल
निशाते-तलब की वो सौगात देंगे
हवाओं के हाथों में हम हाथ दे कर चलेंगे
यूँ ही, नो-ब-नो, मुतजिर मजिला की तरफ पाव उठते रहेगे

रफाकत=मिन्नता मसाफत=यात्रा मदावा=
उपचार कैफपरवर=प्रानदित करने वाले
मराहिल=मोड निशाते तलब=प्रानद की
अभिलाषा नो ब नो=गये स नया मुतजिर=प्रतीक्षित

सफर पर चले थे तो सोचा था ————— लेकिन
 सफर पर चले थे तो सोचा कहाँ था
 ये मज्जर इन आखो ने उस वक्त देखा कहाँ था
 न रस्ता कोई लडखडाती नजर मे
 न कटअ-ए-मसाफत का सौदा है सर मे
 निशाते-तलब ही की सौगात कोई
 न उन खाली हाथो मे है हाथ कोई
 थकन से लरजते हुए पाँव बजर जमी मे गडे है
 जहा से सफर पर चले थे किसी दिन
 वही हम अभी तक अकेले खडे हैं

कटअ ए मसाफत = यात्रा को कम करना निशाते तलब = धान की अभिलाषा

एक अच्छा शहरी

सुबह को जब वो घर से निकला
लाड से बीबी दरवाजे तक छोड़ने आई
छोटे-छोटे कदम उठाता
नीची नज़र से
बम स्टाप की समत बढा वो

दाय बाये मजर क्या है
तेज हवा क्यों चलती है, मौसम कैसा है
आगे आगे चलने वाला अनजाना साया किस का है
इन बातों की तरफ कब उस का ध्यान गया है
अपनी परछाई की हद से आगे कब उस ने देखा है
इन बातों पर ध्यान वो क्यू दे
क्यूँ इन मे वो दिलचस्पी ले
मुफ्त परागदा खातिर हो ? और तो इन मे क्या रक्खा है ?।

उस का ध्यान तो मतलूबा नम्बर की बस के पहियों की रफ्तार मे गुम है
जो तेजी से उस के दफतर के रस्ते पर दौड रही है
चौराहे और मन्दिर मस्जिद
सब को पीछे छोड रही है
उस की दिलचस्पी का मरकज तो वो ऊँची सी कुर्सी है

सम्भ=तरफ खातिर=उद्दिग्न मतलूबा=भपेक्षित मरकज=बेद

जिस के आगे लोहे की इक मेज रखी है
 मेज प' बिखरे फाइल ही उस की दुनिया है
 आज और कल हैं
 अपने हालो-मुस्तकबिल के सारे खाके उस ने उन मे देख लिये है
 मेज प' जितने फाइल होंगे
 वो उतनी ही दिलचस्पी से दपतर मे मौजूद रहेगा
 हर फाइल को बारी बारी
 सघे हुए हाथो की तराजू मे तौलेगा
 मेज के इक कोने से उठा कर दूसरे कोने पर रख देगा
 सारे दिन 'मसरूफ' रहेगा

अफसर की खुशनुदी का परवाना ले कर
 शाम को सीधा घर आयेगा
 दरवाजे पर बीबी इस्तकबाल करेगी
 मुस्तकबिल के रोशन रवाबो मे कुछ ताजा रंग भरेगी
 बस स्टाप प' भीड़ बहुत थी
 चौराहे पर शायद एक्सीडेंट हुआ था
 बीच सडक पर एक विदेशी कार खडी थी
 पास ही उस के, खून मे डूबी लाश पडी थी
 सब दुकानें बंद थी, शायद शहर मे फिर हडताल हुई थी
 अनपढ़ हॉकर अखबारो को नचा नचा कर चिल्लाते थे
 'आज की ताजा खबरें' कह कर बासी खबरे दोहराते थे
 तीस मरे, सत्तर जखमी हैं
 भूका, नगा, बेघर रेवड पार्लिमेन्ट प' टूट पडा था
 (सरकारी एलान की रू से एक मरा है, दो जखमी है)
 सठ घनी घनवान की सब से छोटी बेटी
 अपने घर के नौकर के साथ आज सवेरे भाग गई है

हालो मुस्तकबिल=वतमान धोर भविष्य मसरूफ=व्यस्त ख शनुदी=
 प्रमनता इस्तकबाल=स्वागत मुस्तकबिल=भविष्य रू=हिमाय विचार

समुन्दर का नोहा सुनो ।

समुन्दर का नोहा सुनो — और सोचो
समुन्दर को यू किस ने नाला-व-लव कर दिया है
समुन्दर के पुरशोर सगीत में किस ने गम भर दिया है
खरोशाँ समुन्दर की भीजा को क्या दुख है,
ये किसलिये इस अलमनाक अदाज में चीखती है
सिसकती सी आवाज में चीखती हूँ

समुन्दर का नोहा सुनो — और सोचा
समुन्दर का पानी लहू रग क्यू है
समुन्दर का सीना
चमकती हुई खुशनुमा सीपियो, बेवहा मोतियो का खजीना
समुन्दर के सीने प' किस ने ये खनी सफीने उतारे
समुन्दर की दौलत
समुन्दर की गहराइया से निकाली
किनारे प' डाली
लुटरे जहा सफ ब-सफ हाथ अपने पसारे खडे थे
समुन्दर की शहरग में जिन की हवसनाक नजरो के खजर गडे है

नोहा=विस्तार नाला व लव=आतना पर बाध्य अलमनाक=
दर्दिले बेवहा=अमूल्य खजीना=भण्डार सफीने=ताबे
सफ व सफ=पक्किबड शहरग=जीवन नामे हवसनाक=सोलुप

समुन्दर का नोहा सुनो — और साचो
समुन्दर की शहरग मे वहता लहू कतरा-कतरा
नही —
कतरा कतरा नही, शोला शोला
समुन्दर मे फला
किनारो की जानिव बढा आग और खू का रेला
तो किस से रुकेगा
कोई है जो तूफाँ के बढते रुदम रोक लेगा ? ।

समुन्दर का नोहा सुनो — और सोचो
ये फूलो भरी बस्तिया —
जो तुम्हारे लिये नग्माजारे-इरम ह
ये आतिश-ब-जाँ नोहा वर लव समुन्दर की सव्याल सरहद से
अब के' कदम ह ।

जानिव=ओर नग्माजारे इरम=स्वग का सगीत उत्पन्न
करने वाला आतिश ब जाँ=आत्मा मे आग लिये नोहा
वर लव=हीटो पर बिलाप सव्याल=धव क=किनारे

मेरा नाम

मेरा नाम सुल्तान मुहम्मद खाँ है
में वेटा हूँ
मौलाना अहमद खाँ का
जो पजवकता नमाज़ी थे
लेकिन मैं फज्र की नमाज़ के वकत
सोया हुआ पाया जाता हूँ
जुहर और अस्त्र की नमाज़ो मे
दफ्तरी मसरूफियत ———
मेरा पीछा नहीं छोड़ती
मगरिव जीर इशा की नमाज़े
मुझ पर लानत भेजती हैं
कि ये वकत मेरी शरावनोशी का है
इस के वावजूद मुझे
अपने नाम पर भी इस्लार है
और अपनी वलदीयत पर भी

पजवकता नमाज़ी=वाचो वक़्त की नमाज़ पढ़ने वाले फ़ज्र=प्रातः काल
जुहर=दोपहर की नमाज़ अस्त्र=सूर्यास्त से पढ़ने की नमाज़
मसरूफियत=वार्षिक सबघी ब्यस्तता मगरिव=सायंकाल की नमाज़
इशा=रात की नमाज़ इस्लार=ख़िद हठ वलदीयत=बाप का नाम आदि

गुमशुदा कडियाँ

बहुत दिनों का किस्सा है ये
बचपन के आकाश के नीचे
भरे पूरे घर के आँगन में
हमजोली लम्हा से जब मैं
आख मिचौली खेल रहा था
वक्त अचानक कोई शरारत कर जाता था
घर की कोई चीज किसी दिन
देखते देखते खो जाती थी
आख से ओझल हो कर जैसे रूह में शामिल हो जाती थी

आज वो सब चीजे मेरा बर्बादशुदा माजी हैं, मैं हूँ
जिस ने ये चीज नहीं देखी
मेरे माजी को नहीं जाना
मुझ को क्या पहचान सकेगा
मैं क्या हूँ ? क्या जान सकेगा ? ।

बर्बादशुदा माजी—विध्वंस अतीत

ग्विजाँ का मौसम

खिजाँ का मौसम है,
पेड बेवर्गो-वार शाखा का इक हयूला हँ
इक ठिठरता हुआ हयूला
कि पत्ता पत्ता
हवा के यखवस्ता सद भोको की मार खा कर
तमाम सरताबियाँ भुला कर
हवा के कदमो मे जा गिरा है
ये खुशक पत्तो के ढेर, शादाबी-ए-गुजिश्ता की यादगार
बरहना पेडा की खुशलिवासी के मुस्कराते दिना की पामाले-गम बहारें
हवा उठा कर उन्हे कही फेक आयेगी
पेड चुप रहेंगे
हवा से कुछ भी न कह सकेंग
कि बेजबाँ हँ
तिलिस्मे-फितरत के राजदाँ ह
मगर परिन्दो की खानाबर्बाद टोलिया शोर कर रही है
वो नाश्नासे-तिलिस्मे-फितरत

खिजाँ=पतझड बेवर्गो वार=बिना पल-पूल हयूला=
आकृति का आभास यखवस्ता=बफ कर देने वाले सरताबियाँ=
उदृष्टताए नायाबी ए गुजिश्ता=बीती हुई प्रफुल्लता बरहना=
नये ख शलिवासी=मन्त्र परिधान पामाले गम=दुखो की
रौंदो हुई तिलिस्मे फितरत=प्रकृति के रहस्य राजदाँ=
रहस्य जानने वाले खानाबर्बाद=जिनके घर नष्ट हो गये हैं
नाश्नासे तिलिस्मे फितरत=प्रकृति के रहस्य से अपरिचित

वसेरे जिन के उजड गये है
 सब अपने अपने घरों से शायद विछड गये हैं
 घरों की पहचान सब्ज पत्तों के सायबानों से थी,
 जो बर्बाद हो के मिट्टी में मिल चुके है
 निगाह, धवरा के बेकरारी के साथ
 वीरानियों में चारों तरफ घुमाई
 हरे-भरे गुमशुदा घरों की कोई निशानी न देख पाये
 निगाह की आखिरी हदों तक —————
 फिजा खण्डर है
 तमाम मज्जर
 उजाड मौसम की जाविदानी का नक्शगर है

सायबानों = छाया करने वाले जाविदानी =
 बमरदा नक्शगर = बेलबूटे बनाने वाला

रास्ते रोशन

नया सूरज जमी पर रोशनी फैला रहा है,
———— दूर तक है रास्ते रोशन
हजारो जरफिशा किरने
सफर में है चमकती तितलिया वन कर
घने जंगल, खुले मैदान, बल खाती हुई नदियाँ,
कि भुरमुट कोहसारो के
मुसाफिर रोशनी की आखिरी मजिल नही कोई

नया सूरज
जमी पर रोशनी फैला रहा है,
———— दूर तक हैं रास्ते रोशन
हजारो जरफिशाँ किरने

जरफिशाँ=स्वयं बिचेरती किरणें कोहसारों=पहाड़ों

सफर मे है ————— चमकती तितलियाँ बन कर
 हवा के दोशे-रगी पर
 फिजाये नूरो-निकहत का है, गहवारा —————
 फसू परवर ये नख़ारा
 निकल कर अपने मामूलात की अधी गुफाओ से
 चले हम भी चमकती तितलिया की हमरकावी म
 उसी सदियो पुरान शहर की जानिब
 जहा सदिया पुराने गोश-ए-जुल्मत म,
 ————— इक तख़ता गुलावो का
 गुजरते वक़्त की नैरगियो पर दम-ब-खुद हीराँ
 मुसाफिर रोशनी की वापसी का मुतजिर हागा

दोशे रगी=रगीन कचे नूरो निकहत=प्रकाश और मुग़ध
 गहवारा=हिडोला फसू परवर=जादू को बढाने वाली
 नख़ारा=दृश्य मामूलात=नित्य कर्मों हमरकावी=
 सहपात्रा जानिब=तरफ गोश ए जुल्मत=अधरे कोने
 नैरगियो=विविधताओ दम ब खुद=मौन मुतजिर=प्रतीक्षित

खाक-ओ-बाद से आगे

तुझे जो देखा
तो दिल में कसी उमंग जागी !

किसी सुहाने सफर प' निकले
नयी-नयी वादियों से गुजरे
हरे भरे जंगलो में घूमे
जवाँ नदी के कुशादा सीने प' होट रख द
सजल पहाडों की सुमई चोटियाँ को छू ले
हवा के भूले में खूब भूले

नयी नयी वादियाँ के हैरानकुन सफर में
हरे भरे जंगलो की पुरपच रहगुज्र में
सुगंध धरती की शाक की राहवर हो, गुमराहियों का डर हो
कहीं मिल शबनमी ढलाने, कहीं चटानों से सरत टीले
कहीं दरकती जमी से उठते घुँ के बादल हो नीले-नीले

कहीं परिन्दा की फडफडाहट
किसी अघेरी गुफा की खामोशियों प' यल्लार कर रही हो
कहीं पुरअसरार घाटियों में छुपे दरिन्दे झगड रहे हो

खाक ओ बाद=मिट्टी धीर हवा कुशादा=चौड़े हैरानकुन=
अधभित करने वाले पुरपेच=धूमावदार राहवर=पथ
प्रदर्शक यल्लार=घात्रमण पुरअसरार=रहस्य से भरपूर

शऊर का काफिला, धुधलका की रहगुजर से
गुजरता जाय
वदन की हृदवन्दिया का अहसास मरता जाये
धुटा-धुटा सा वजूद, इन्ही मजरा के ऊपर विखरता जाये

तुम्हे जा देखा
तो दिल के ठडे लहू मे कितने उवाल आये
न जाने क्या-क्या खयाल आये ।।

शऊर=विवेक रहगुजर=रास्ता हृदवन्दियों=सीमा
निर्धारण निशान वजूद=वस्तुत्व मजरो=स्थलों

लहू में डूबता मजर

ये कैसे रोजो-शब हूँ जो लहू में तरते आये
गुजरते वकत की पहचान इक मौजे-लहू ठहरी ।

लहू में तर-व-तर हर लम्ह-ए-मौजूद का चेहरा
हमारी वस्तियों की शहरगे ये काट दी किसने ?
बदन में दौड़ता जिन्दा लहू सडको प' वह निकला
नदी बन कर वहा सडका से मैदानों तक आ पहुँचा
लहू ताजा लहू

मौसम व मौसम वहता जाता है
हरी फसलें लहू के आतिशी सैलाब में डूबी
जमी की कोस खूने-गम के लावे में जलती है
लहू की बू, मुलगतो बू हवा के साथ चलती है

मजर=शय रोना शब=दिन और रात मौजे लहू=लहू की लहर
तर व तर=समूचा भागा हुआ लम्ह ए मौजूद=उपस्थित पल
शहरगें=बावन शक्ति देने वाली रक्त की नली सैलाब=बाढ़

सुलगते खून की वू पर दरिन्दे शोर करते है
 फिजा मे जव कोई ताइर कही पर फडफडाता है
 तो जलते वाजूआ से खून के कतरे टपकते है
 (घुआ गहरा न हो तो हम ये मज्जर देख सकते है)

घुए की फैलती चादर

लहू मे डूबता मज्जर

अजल की तीरगी ने छीन ली आँखो की बीनाई
 नज्जर से जिन्दगी के आखिरी आसार भी गुम है
 ये काई मौजिजा होगा, अभी जिन्दा जो हम-तुम है

ताइर=पक्षी पर=पथ अजल=मीन तीरगी=ब्रधरा
 बीनाई=आँखो की मोनि आसार=बिह्व मौजिजा=चमत्कार

अधी गुफा मे मौत

फजा मे किसी गम की झकार मडला रही है
हवा के लवो पर —
कोई मातमी धुन है जो जज उफक ता उफक गूजती है
मगर आस्माँ दम-व-खुद है
जमी अपने महवर प' ठहरो हुई सोचती है कि क्या खो गया ह
कहा कुछ न कुछ सान्हा हो गया है

में इक सद अधी गुफा के दहाने प' गुमसुम खडा हूँ
बहुत जोर से चीखना चाहता हूँ
भयानक उदासी का सगी फसू तोडना चाहता हूँ
बहुत जोर से चीखना चाहता हूँ
मगर मेरी आवाज मुझ से विछड कर कही ला गई है
मिरे सारे जखे, सभी ख्वाहिशे बेजबा हो गई ह
हर अहसास खामाशियो की सियाही मे मुह को लपेट पडा ह
कोई लपज अब मेरे दुख का मदावा नही है
कोई लपज मेरा मसोहा नही है
मुझे ऐसा लगता है जैसे नफस दो नफस मे
हर अहसासो-इद्राक का साथ मैं छोड दूगा
इस अधी गुफा मे कही गिर के चूपचाप दम तोड दूगा

उफक ता उफक = धित्तिव से धित्तिव तरु दम व खुद = मौन महवर = धुरी
सादा = दुपटना दहान = द्वार फसू = जादू जखे = भाव मदावा = उपचार
नफस दो नफस = एक दो सास अहसासो इद्राक = संवेना और विवक

नवद

बदलते मौसम का अवल्ली खुशनवा मुग्घी
 ये नन्हा-भुजा-सा इक परिन्दा
 जो इक पुराने दररत के नोदमीदा पत्तो की चिलमना मे
 छुपा हुआ चहचहा रहा है
 हवा के बरवत प' जश्ने-नी रोज का तराना सुना रहा है
 नवा-ए-रगी के जेरो-वम से
 फजा के खामोश, सद सीने मे एक हलचल मचा रहा है
 नई तमाजत से मेहरवा आफताव की हुमकता पा कर
 ठिठरती बेवग डालियो मे करीन-ए वर्गो-वार पा कर
 शगुपता लम्हो की तितलियो को चमन मे वापस बुला रहा है

नवद=शुभ सूचना अवल्ली=पहना छ शनवा=मधुर मुग्घी=गायक
 नोदमीना=नये उगे हुए बरवत=एक वाद्य जश्ने नी राज=नव बर्ष का
 उत्सव नवा ए रगी=आकषक आवाज जेरो वम=भारोह भवरोह
 तमाजत=गर्मी आफताव=सूय बेवग=बिना पत्तावाती करीन ए वर्गो
 वार=फूल पत्तो की सभावनाए शगुपता=प्रपुल्लित लम्हो=धायो

तरब की धुन में
 ये सरमदी गीत गा रहा है
 — कि रगो-निकहत के आवशारो
 गुलो-समन के हसी नजारो
 खिजा के डर से चमन से निकली हुई वहारो
 अदम की यखवस्ता वादियो में फिरोगी खानावदोश कब तक
 रहोगी यूँ बफपोश कब तक
 नमू की दुनिया लिये नजर में
 पलट के आ जाओ अपने घर में
 खिजाँ का अफ्रीत मर चुका है
 तुम्हारी खानावदोशियों का उजाड मौसम गुजर चुका है

तरब=आनंद सरमदी=दिल का धमक न हो रगो निकहत=
 रग और मुखध आवशारो=झरने गुलो समन=पूने के नाम
 खिजाँ=पतंग अम=मृत्यु यखवस्ता=बर्फीली बफपोश=
 बर्फ पहने हुए नमू=बिदाव अफ्रीत=दानव

बुलावा

जरा ठहरो ! किधर हम जा रहे हैं
उधर, उस चार दीवारी के पीछे
वो बूढ़ा गोरकन चिल्ला रहा है

“इधर जाओ ! कदम जल्दी बढ़ाओ
यहाँ इस चारदीवारी के अन्दर
जनम दिन से तुम्हारी मुतजिर है
वो कब्रें, जिन की पेशानी प' अब तक
किसी के नाम का कत्वा नहीं है

गोरकन = कब्र धोने वाला मुतजिर = प्रतीक्षित पेशानी = पलाट
पत्वा = समाधि पर लगा पत्थर जिस पर मृतक का विवरण होना है

जमी का ये टुकड़ा

जमी का ये टुकड़ा

मिरे बढते कदमो को चारो दिशाओ से अपनो तरफ खीचता है
गले से लगा कर मुझे भीचता है
कि बारह वरस से यहाँ दफन हूँ मैं

जमी का ये टुकड़ा

मिरे दीदा-ओ-दिल की मजिल, मिरी जिन्दगी है
कि ज़रों मे उस के अजब दिलकशी है
मगर मैं तो उस से गुरेज़ाँ रहा हूँ
गुरेज़ाँ हूँ अब भी
कि उस तौद-ए-खाक के रूवरू मैं
पशेमा या कल भी, पशेमाँ हूँ अब भी
पशेमानीया मेरे शामो-सहर का मुकद्दर
पशेमानीयो से मिरे रोज़ो-शव की फिजाये मुकद्दर

जमी का ये टुकड़ा

दिखाता है मुझ को मिरी बेवसी का वो आईना जिस मे
अभी तक वो इक साअते-मुफइल मुझकिस है
कि जव वो मुझे या उसे कत्ल करने को ले जा रहे थे
वही जो यहा खाक की चादर जोड़े हुए चुप पडा है
जो मेरा ही इक पैकरे-बूशुदा है

दोना ओ दिल = रसिद और भावना गुरेज़ाँ = पनापन करने वाला
वो ए खाक = रेत के छोट बड (लट्टू, बॉक) से घाकार. पशेमाँ =
निब्रत शामो सहर = मूहूँ और शाम राबदा सब = दिन और
रात क्रिदाय मुकद्दर = मलिन गनावरगु शामत मुकद्दर = मरदा
जनक पल मुमकद्दर = अविबिन्न पकर न गूना = रमरुबिन्न बाइदि

तो जब वो उसे या मुझे कत्ल करने को ले जा रहे थे
तो वेदस्तो-पा इक तमाशाई की तरह मैं उन का मुँह तक रहा था
समझ मे न आये अगर अब मैं सोचू मुझे क्या हुआ था
मिरी बेवसी थी किसी लम्ह-ए-बेवसीरत की साजिश
कि उस मे कोई मस्लहत उस की थी

दीदो दानिश मे कद जिस का सब से बडा है
जो हर अहदे-आईन्दा-ओ-रपता के इल्मो-इल्लत की हद है
अजल है, अबद है

जमी का ये टुकडा
जहा आ के मैं खुद को बूढा सा महसूस करने लगा हू
खुद अन्दर ही अन्दर बिखरने लगा हूँ
मिरी हर तगौ-दी का हासिल है, हद है
अजल है, अबद है

(मजारे जसलम पर)

वेदस्तो पा=बिना हाथ पाय का लम्ह ए बेवसीरत=बिबन पूय पन
मस्लहत=अपने हितों वा ध्यान दीदो दानिश=औष जीर बुद्धि
अहदे आईन्दा ओ रपता=भूत घोर भविष्य का युग इल्मो-इल्लत=
ज्ञान के कारण अजल=आदि अबद=भान तगौ दी=भागदोद

